

परिवर्तन के महान क्षण: एक आध्यात्मिक वैज्ञानिक का प्रयोग और भविष्यवाणी

२१वीं सदी और मानव विकास के लिए एक तर्कसंगत, प्रमाण-आधारित मार्गदर्शिका।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही ज्ञान के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

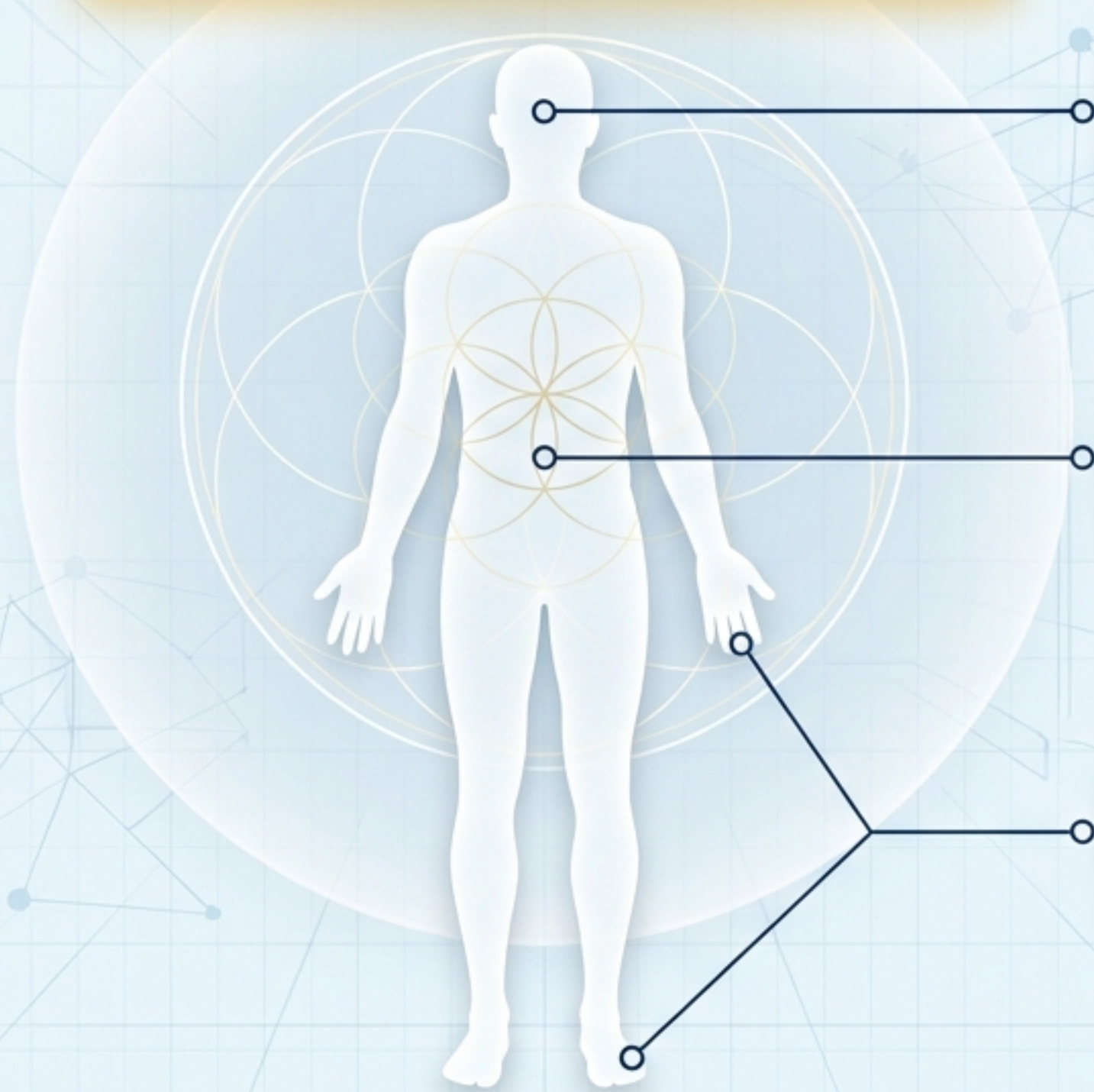
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि क्रान्तिधर्मी साहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदयमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सबसे महान प्रयोगशाला: स्वयं की देह और चेतना

परिकल्पना: यदि पुरातन काल का सतयुगी अध्यात्म सत्य है, तो उसे आज के शरीर की प्रयोगशाला में प्रमाणित किया जा सकता है।

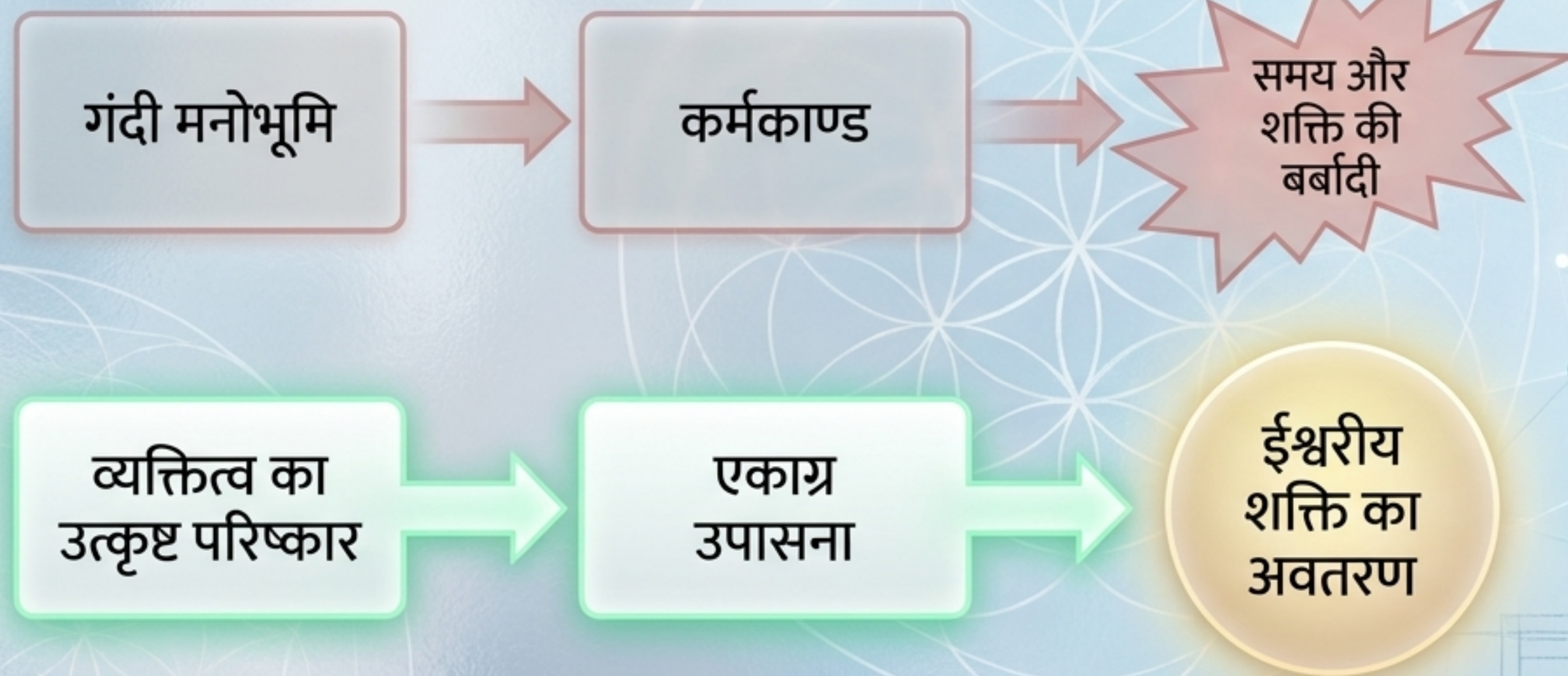


चिन्तन - परमार्थ सम्पादन का उपकरण।

भावनाएँ - करुणा और उदारता का स्रोत।

कर्म - जीवन साधना और पुरुषार्थ।

आध्यात्मिक विज्ञान की अनिवार्य शर्तः व्यक्तित्व परिष्कार



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही
चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों
से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुल्देव युगऋषि वेदगुर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

दैवी ऊर्जा का सिद्ध सूत्र: त्रिधा भक्ति



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रांति साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” – पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रयोग के कड़े नियम: एक न्यूनतम ऑपरेटिंग सिस्टम

पैरामीटर	सामान्य जीवन	प्रयोगकर्ता का जीवन
आहार	स्वादिष्ट व महंगा	देश के सबसे गरीब नागरिक के स्तर का
वस्त्र	प्रतिष्ठा सूचक	श्रमिक स्तर का
महत्वाकांक्षा	धन, यश और आत्म-प्रदर्शन	पूर्ण शून्य - केवल लोकमंगल

“बेरा ज्ञान शरीर ही विन्यास रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रमाण है।
वसन्त पंचमी १९९० को बन्दीवारा में ज्ञान बाँटिएगा और ज्ञान वससे कहेंगे।
मैं बच्चों से कहिएगा। जो मेरे कानिमी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगशक्ति वेदपूति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा

आध्यात्मिक प्रयोग के प्रमाणित परिणाम: सिद्धियाँ



एक मनुष्य के शारीरिक वजन के बराबर साहित्य का सृजन



५ लाख से २५ लाख से अधिक स्वयंसेवकों का विशाल वैश्विक परिवार



बिना भिक्षा माँगे हजारों प्रज्ञापीठों और शातिकुंज का निर्माण



८० वर्ष



८० वर्ष की आयु में भी द्रोणाचार्य जैसा अटूट संकल्प और स्फूर्ति

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सच्चे और छद्म अध्यात्म की स्पष्ट पहचान

छद्म अध्यात्म

चमत्कार ढूँढ़ना

वी.आई.पी. लोगों के लिए भगवान
का ‘एजेंट’ बनना

निजी स्वर्ग/मुक्ति की कामना

⚠ परिणाम: अहंकार और पाखण्ड

सच्चा अध्यात्म

जनसाधारण की समस्याओं का समाधान

अनीति का उन्मूलन

लोक मंगल

परिणाम: ब्रह्माण्डीय शक्ति

युग परिवर्तन का विज्ञान: जब भक्ति शक्ति बन जाती है



इतिहास में आध्यात्मिक हस्तक्षेप के अकाट्य प्रमाण

प्राचीन काल

महर्षि दधीचि
→ अस्थियों का वज्र
→ वृत्तासुर के सर्वव्यापी
अनाचार का विनाश।

त्रेता युग

विश्वामित्र
→ प्रचण्ड तपस्या
→ असुरता का निराकरण और
सतयुगी सुसंस्कारिता की वापसी।

आधुनिक युग

वसंत १९९० का सूक्ष्म प्रयोग
→ युगऋषि की साधना
→ २१वीं सदी के वैचारिक
प्रदूषण का शमन।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

केवल भौतिक विज्ञान संसार को क्यों नहीं बचा सकता?



समस्याओं का मूल कारण अनैतिकता है,
समाधान केवल अध्यात्म है।

विषवृक्ष की पत्तियाँ काटने से
कुछ नहीं होगा, जड़ काटनी होगी

Solution Key

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा, मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

स्थूल से सूक्ष्म जगत की ओर ऐतिहासिक प्रस्थान

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



वसंत १९९० से
सूक्ष्म प्रयोग प्रारंभ

स्थूल शरीर:
एक बीज की तरह।
सीमित, स्थानीय, भार युक्त।

सूक्ष्म चेतना:
विशाल वृक्ष और हवा की तरह।
असीमित, सर्वव्यापी, अत्यधिक सक्रिय।

आत्मबल का विज्ञान: मृत्यु समाप्ति नहीं, एक विस्तार है

वसन्त पंचमी १९९० को वेदज्ञा हवा, चाँदनी और किरणों के साथ मिलकर अनंत शक्ति बन जाती है।

“मेरे ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। हान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए।”
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रांतिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन भविष्य में पहुँचाने का प्रयास करें।”
—

शरीर बल

आत्मबल

सम्पत्ति बल

बुद्धिबल

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान पहुँचाने का प्रयास करें।”
और आप सबसे कहियेगा — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान पहुँचाने का प्रयास करें।”

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान पहुँचाने का प्रयास करें।”

स्वामी रामतीर्थ का ‘मौत के नाम खत’: शरीर का भार हटते ही चेतना हवा, चाँदनी और किरणों के साथ मिलकर अनंत शक्ति बन जाती है।

इक्कीसवीं सदी की सुनिश्चित भविष्यवाणी

खनिज तेल व ऊर्जा समाप्ति
→ भौतिक विज्ञान का पतन

प्रकृति की ओर वापसी और
अध्यात्म विज्ञान का उदय

युद्ध, महामारी और
अभावों का अंत

महाक्रान्ति और
सतयुग की वापसी

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

नवयुग की धुरी: जाग्रत नारी का अभूतपूर्व अवतरण



युग परिवर्तन की महाक्रान्ति में आपकी भूमिका

क्रान्तिधर्मी साहित्य पढ़ें

इस आध्यात्मिक विज्ञान को जीवन में उतारें

लागत मूल्य पर बिना कॉपीराइट जन-जन तक बाँटें

नवसृजन के सक्रिय वाहक बनें

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)